International Journal of Information Movement Vol.I Issue IV (August 2016)
ISSN: 2456-0553 (online) Pages 21-30

सूफ़ी काव्य परंपरा का विकासात्मक परिचय

डॉ. कुलदीप कौर
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय टी. पी. डी. मालवा कॉलेज,
रामपुरा फुल, बठिंडा, पंजाब
Email: kuldeep18674@gmail.com

हिन्दी साहित्य में सूफ़ी काव्यों के आरंभ के समय के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। प्रारंभ में सूफियों का कोई सम्प्रदाय नहीं था । जो सन्त साधना में लीन रहते थे, सूफ़ी' थे । कालान्तर में अन्य सम्प्रदायों की तरहइनका भी सम्प्रदाय बन गया और इनके भी मत और सिद्धांत बन गये । ये साधक अत्यन्त उदार थे और धार्मिक तथासाम्प्रदायिक बन्धनों के प्रति उदासीन रहा करते थे । इस्लाम के विभिन्न सम्प्रदायों के चक्कर में न पड़कर समन्वय काकाम लेते हुए, अच्छे को ग्रहण कर, बुरे को त्याग कर, खण्डन–मण्डन से उदासीन एक अपने ही प्रकार के सम्प्रदाय केरूप में उभर कर सामने आया ।

डॉ. जोगेन्द्र प्रकाश ठकराल ने हिन्दी सूफ़ी काव्य परंपरा की विकास यात्रा को 1379 ई. में दाऊद रचित 'चंदायन' से आरंभ होकर नसीर–कृत 'प्रेमदर्पण' तक चलती हुई बतलाया है।[1] लगभग साढ़े पाँच सौ वर्षों की इस दीर्घ परंपरा में निम्नांकित काव्यों का महत्वपूर्ण स्थान है –

1.	मौलाना दाऊद	चंदायन	1379ई.
2.	राजन	प्रेमबन जोत निरंजन	अज्ञात
3.	शेख कुतुबन	मृगावती	1503 ई.
	मलिक मुहम्मद	(पद्मावत, अखरावट)	
4.	जायसी	(आखिरी कलाम, चित्ररेखा)	1540 ई.
5.	मंझन	मधुमालती	1545 ई.
6.	शेख उस्मान	चित्रावली	1613 ई.
7.	कवि जान	(दो दर्जन से अधिक प्रेमाख्यान	
8.	शेखनबी	ज्ञानदीप	1618 ई.
9.	सूरदास	नलदमन	1657 ई.
10.	हुसैनअली	पुहुपावती	1725 ई.
11.	कासिमशाह	हंसजवाहिर	1736 ई.
		(क) इन्द्रावती	
12.	नूरमोहम्मद	(ख) अनुराग–बांसुरी	1764 ई.
13.	शेख निसार	युसूफ–जुलेखा	1790 ई.

International Journal of Information Movement Vol.I Issue IV (August 2016)
ISSN: 2456-0553 (online) Pages 21-30

14.	शाहनजफ़अली	(क) अखरावती (ख) प्रेमचिन्गारी	1809 ई. 1845 ई.
15.	शेख रहीम	भाषा प्रेमरस	1903 ई.
16.	ख्वाज़ा अहमद	नूरजहा	1905 ई.
17.	नसीर	प्रेमदर्पण	1917–18 ई.

इन रचनाओं का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित प्रकार से है –

1. मौलाना दा□द कृत चंदायन

चंदायन के रचायिता मुल्ला–दाउद ने स्वयं समय और स्थान का उल्लेख किया है । उनका चंदायन (सन् 1379 ई.) मेंलिखा गया । वह उलमऊ के रहने वाले थे [2]और अपने यहाँ की लोक प्रचलित गाथा चनैनी के आधार पर उन्होंनेचंदायन की रचना की । [3]उनके ग्रन्थ की अपूर्ण एवं खंडित प्रति प्राप्त होने से उनके गुरू के प्रति कुछ नहीं कहा जा सकता । 'चंदायन' नायिका प्रधान प्रेम काव्य है । इसमें नूरक और चंदा की प्रेम कहानी है जो रूढ़ियों से हटकर एक नए परिवेश में प्रस्तुत की गई है । प्रस्तुत काव्य में न तो समुद्र का वर्णन है और न ही मानसरोवर का । इसके साथही साथ सूफ़ियों का ब्रह्रा (नायिका) स्वयं ही जीव (नायक) से मिलन के लिए व्याकुल रहता है और अंतिम विशेष बात यह है कि चंदायन की नायिका चंदा ध्रुवस्वामिनी की तरह अपने क्लीव पूर्वपति को छोड़कर चन्द्रगुप्त के समान नूरकका वरण करती है ।

2. राजन–कृत प्रेमबान जोत निरंजनचंदायन के पश्चात् शेख रिजकुल्लाह 'मुश्ताकी' कृत 'प्रेमबान जोत निरंजन नामक' एक सूफ़ी काव्य का उल्लेख मिलता है, जिसकी रचना का समय 1492 ई. से 1581 ई. के बीच किसी भी समय का हो सकता है। कहा जाता है कि शेख मुश्ताकी (राजन) फारसी और हिन्दी के अच्छे ज्ञाता थे और दोनों भाषाओं में कविता लिखते थे। हिन्दी में उनका उपनाम 'राजन' या 'रज्जन' था।

3. कुतुबन – कृत मृगावतीकुतुबन ने (सन् 1503 ई.) में अपने काव्य की रचना की । उन्होंने परंपरागत शैली का अनुसरण करते हुए समसामविक बादशाह हुसेनशाह का भी वर्णन किया है । कुतुबन के गुरू जौनपुर के बुढ़न थे जो सुहरवर्दिया सम्प्रदाय के थे । अब तक कुतुबन को चिश्ती संप्रदाय का समझा जाता रहा है किन्तु अब इस मत का खण्डन हो चुका है । मृगावती में कुँवर तथा मृगावती की प्रेम कथा है जो सूफ़ी प्रेमाख्यानक काव्य रूढ़ियों से पूर्णतया आबद्ध है ।

4. मलिक मुहम्मद जायसीकृत

(i) पद्मावत प्रसिद्ध सूफ़ी प्रेमाख्यान पद्मावत के प्रेणता कविवर जायसी चिश्ती सम्प्रदाय के कर्णधार निजामुद्दीन औलिया का शिष्य परंपरा में से थे । इस परंपरा की दो प्रमुख शाखाएँ हुईं – एक मानिकापुर कालपीवाली और दूसरी जायसीवाली । जायसी ने इन दोनों शाखाओं के पीरों की चर्चा 'पद्मावत' और 'अखरावट' में विस्तार से की है । पद्मावत में दोनों पीरों की चर्चा इस प्रकार है –

सैय्यद असरफ पीर पियारा । जेइ मोहिं पंथ दीन उजियारा ।
गुरू मोंहदी सेवक मैं सेवा । चले उताइल जेहिकै सेवा ।। [4]
'अखरावट' में दोनों पीरों का उल्लेख इस प्रकार है –
कही सरीअत चिस्ती पीरू । उधरी असरफ औ जहँगीरू ।।
पा पाएउँ गुरू मोंहिदी मीठा । मिला पंथ जौ दरसन मीठा ।। [5]

पद्मावत में रतनसेन तथा पद्मावती की प्रेम कथा है । अपने आध्यात्मिक अनुभव एवं लोकज्ञान के बल से कवि ने उसे रोचक बनाये रखा है ओर वह उसमें सफल भी हुआ है । सूफ़ी सिद्धान्तों का सम्यक दर्शन यदि किसी सूफ़ी प्रेमाख्यान में सम्भव है तो वह पद्मावत में ही है । पद्मावत में जीवरूपी रतनसेन को पद्मावती रूपी ब्रह्म से मिलाने के लिए सुआरूपी गुरू की भूमिका महत्वपूर्ण है साधना के मार्ग में कठिनाइयाँ आवश्यक हैं अत: अलाउदीन प्रभृति शैतानों का समायोजन जहाँ इस काव्य को ऐतिहासिक प्रकाश देता है वहाँ सिद्धान्त निरूपण में भी सटीक बैठता है।

(ii) अखरावट

'अखरावट' की लगभग एक दर्जन से अधिक हस्तलिखित प्रतियाँ मिलती हैं। इस ग्रन्थ में कुल 54 दोहे, 54 सोरठे और 371 अर्द्धालियाँ हैं । 'अखरावट' का रचनाकाल 911 हि. है। अखरावट का संबंध अक्षरों–आखरों से है । जायसी ने इसमें हिन्दी वर्णमाला के क्रम से प्रत्येक दोहे का प्रारंभ किया है। इस ग्रन्थ में कवि ने ईश्वर की वन्दना के बाद इस्लाम धर्म के विश्वास के अुनसार सृष्टि की उत्पति, उसका कारण, प्रयोजन आदि का वर्णन किया है। इसमें मिथकों का सुन्दर निर्वाह देखने को मिलता है।

(iii) आखिरी कलाम

आखिरी कलाम की रचना के बारे में उल्लेख करते हुए स्वयं कवि जायसी लिखते हैं –

"नौ से बरस छतीस जब भए । तब एहि कथा के आखर कहे ।"[6]

उपर्युक्त पंक्ति के अनुसार इसकी रचना 936 हि. अर्थात् 1350 ई. है । 'आखिरी' शब्द से अनेक विद्वानों ने यह आशय निकाला कि संभवतः जासयी की ये अंतिम रचना है, परन्तु ऐसा नहीं, अपितु यह कृति कवि की प्रारंभिक कृतियों में से एक है ।

इसमें भी कवि ने ईश्वर–स्तुति, मुहम्मद स्तुति, शाहे–तख्त की प्रशंसा, रचना–तिथि आदि का उल्लेख किया है और इसके बाद प्रलय का वर्णन है । इस काव्य का अन्त स्वर्ग के अनन्त विलास और अनन्त आनन्द के वर्णन के साथ किया गया है ।

(iv) कहरानामा यह मूलतः महरा–महरी के माध्यम को गृहीत करके लिखा गया अन्योक्ति–परक रूपक काव्य है । कहार को आधार बनाकर उसकी वृति का सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ा गया है । जीवात्मा दुलहिन के रूप में अंकित है । कहार डोली में उठाकर उसे प्रियतम के यहाँ ले जाते हैं।

(v) चित्ररेखा

'चित्ररेखा' की तीन हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हैं – (1) सालारे – जंग संग्रहालय, हैदराबाद की प्रति, (2) उस्मानिया विश्वविद्यालय, पुस्तकालय की प्रति और (3) अहमदाबाद की प्रति । यह एक छोटी–सी प्रेमकथा है ।

(vi) मसलानामा

यह दृष्टान्तों, कहावतों, लोकोक्तियों और सूक्तियों से **सम्बद्ध** छोटा–सा, काव्य–ग्रन्थ है । इसके अन्दर बहुत ज्ञान और जीवन की कटु नीतियों का वर्णन अत्यन्त प्रभावी रूप में हुआ है ।

5. मंझन–कृत मधुमालती

सूफ़ी कवियों में मंझन का नाम भी बड़े गर्व से लिया जाता है । इनके जीवन के संबंध में बहुत ही कम जानकारी मिलती है । अभी इनकी एकमात्र रचना 'मधुमालती' का ही पता चला है । मंझन का कथन है –आदि कथा द्वापर चलि आई । (कलियुग महँ भाखा कै गई ।) [7]

अर्थात् यह कथा द्वापर से ही चली आयी है और कलियुग में भाषा में गायी जा रही है। मधुमालती की कथा भारतीय साहित्य में बड़ी लोकप्रिय रही है। इसकी कथा का आधार लोक–प्रचलित कहानी रही है। इसमें पद्मावत के समान ऐतिहासिक नामों और घटनाओं की छौंक नहीं दी गई है।

'मधुमालती' कनेसर नगर के राजा सूरजभान के पुत्र मनोहर एवं महारस नगर के राय विक्रम की पुत्री मुधमालती की प्रेम–कथा है। इसका कथानक अपने पूर्ववर्ती प्रेमकाव्यों–मृगावती तथा पद्मावत से भिन्न है। इसमें मूलकथा के साथ ही एक अंतरकथा भी चलती है। उपनायक एवं उपनायिका की योजना करके कथा को विस्तृत करने के साथ ही प्रेमा और ताराचन्द के चरित्र द्वारा सच्ची सहानुभूति, निस्वार्थ प्रेम एवं संयम का आदर्श भी उपस्थित किया गया है। भाई–बहन के आदर्श, प्रेम की चर्चा करके कवि ने भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्ष का उद्घाटन किया है। जन्मांतर और योन्यंतर के बीच भी प्रेम की अखंडता दिखाकर मंझन ने प्रेम की व्यापकता एवं शाश्वता का सफल चित्रण किया है। अप्सराओं का नायक एवं नायिका के मिलन में योग आश्चर्यतत्व का अपूर्व रूप है। कथा का अन्त सुख एवं समृद्धि में होता है।

6. शेख उस्मान–कृत चित्रावली

चित्रावली के रचयिता उसमान गाजीपुर नगर के निवासी थे। इन्होंने अपनी चित्रावली में अपने निवास स्थान तथा परिवार का सम्यक परिचय दिया है। कवि ने शाहे वक्त के रूप में जहाँगीर की प्रशंसा की है तथा अपने ग्रन्थारंभ का समय (सन् 1613 ई.) लिखा है।[8] ये शाह निजामुद्दीन चिश्ती की शिष्य परंपरा में हाजी बाबा के शिष्य थे। 'चित्रावली' की कथा नेपाल देश के राजा धरनीधर के पुत्र सुजान और रूप नगर की राजकुमारी चित्रावली की प्रेम कथा है। उसमान भी मंझन की भाँति अपनी रचना को सुखान्त ही रखते हैं। आश्चर्य त□वों की संयोजना एवं रूढ़ियों का प्रयोग अन्य प्रेमाख्यानों की भाँति इसमें भी दर्शनीय है। चित्रावली में कुछ पात्रों एवं स्थानों के नाम प्रतीकात्मक हैं। गुरूपुत्र 'सुबुद्धि' का नाम प्रतीकात्मक है। रूप नगर के बीच में पड़ने वाले नगरों के नाम भोगपुर इन्द्रियपुर, गोरखपुर, नेहनगर और रूपनगर आदि शारीरिक विषय वासना, उनके दमन, आनन्द वृति एवं रमणवृति के परिचायक है।

कथानक पूर्णतः काल्पनिक है। अन्य प्रेमाख्यानों की अपेक्षा चित्रावली की एक अपनी विशेषता है कि नायिका का वर्णन परंपरा के अनुसार पद्मिनी रूप में न होकर चित्रिणी रूप में किया गया है।

7. जान कवि की कृतियाँ

इन कवियों के बाद सूफ़ी–काव्य परंपरा में जान कवि का नाम आता है । जान कवि के अब तक के उपलब्ध समस्तग्रन्थों की संख्या 82 है, लेकिन सर्वप्रथम रचना 'कंवलावती' और अन्तिम रचना 'ज़फरनामा नौसेखां' हैं। जान कवि का अध्ययन बहुत विस्तृत था लेकिन इनकी अधिकतर रचनाएँ प्रेमकथाएँ ही हैं। प्रेमकथाओं के अतिरिक्त नाममाला अनेक कार्थी कोश, संगीत, कामशास्त्र, वैद्यक, इतिहास, भूगोल आदि से सम्बन्धित रचनाएँ भी मिलती हैं। कवि जान के प्रेमाख्यान नायिका प्रधान हैं। अपवादस्वरूप कथा कलन्दर, कथा तमीम अंसारी, कथा अरदेसर पातिसाह, कथा सीलनिधान, कथा सुभटराइ, कथा बलूकिया का नाम गिनवाया जा सकता हैं – जो नायक प्रधान हैं व जिनका नामकरण भी नायक के नाम पर ही हुआ है । इनके काव्य में दाम्पत्य, सत् अध्यात्म और स्वच्छन्दतामूल प्रेमाख्यान हैं।

8. शेखनबी–कृत ज्ञानदीप

सूफ़ी–काव्य परंपरा में जान के बाद शेखनबी का नाम आता है जो उसमान के समकालीन थे । अपनी पुस्तक 'ज्ञानदीप' में अपना कुछ परिचय दिया है, जिससे उनके जीवन के सम्बन्ध में हल्का–सा प्रकाश पड़ता है। कवि ने 'ज्ञानदीप' में रचनाकाल का उल्लेख करते हुए लिखा है –

एक हजार सन रहे छबीसा, राज सुलही गनहु बरीसा ।।
संमत सोरह सै छिहंतरा । उक्ति गरंथ कीन्ह अनुसरा ।।
अलदेऊ दोसपुर थाना । जौरनुर (जाउनपुर) सरकार सुजाना ।[9]

इन पंक्तियों से पता चलता है कि शेखनबी मऊ, थाना दोसपुर, जिला जौनपुर के निवासी थे, इस ग्रन्थ की रचना सन् 1619 ई. में हुई थी ।

'ज्ञानदीप' की कथा का प्रारंभ परंपरानुमोदित है । नेमिसार के राजा राय सिरोमनि के प्रतिभाशाली पुत्र ज्ञानदीप से राजा सुखदेव की देवयानी नामक विदुषी कन्या की प्रेम कथा इस प्रेमाख्यान की विषय–वस्तु है। कथा का प्रारम्भिक भाग अन्य कथाओं से भिन्न है नायक विरह पीड़ित होकर स्वेच्छा से गृह त्याग नहीं करता । गुरू के द्वारा उपयुक्त पात्र समझा जानकर गृहत्याग करता है तथा बाद में उसकी वृतियों के अनुकूल ही परममार्ग का प्रदर्शन गुरू के द्वारा होता है । कथा में प्रचुर आश्चर्य तत्वों की योजना है।

9. सूरदास–कृत नलदमन

इस परंपरा में आगे चलकर सूरदास लखनवी का नाम गिनवाया जा सकता है । इन्होंने यह रचना सन् 1067 हिजरी अर्थात् 1657 ई. में प्रारंभ की, जिसका उल्लेख करते हुए सूरदास लिखते हैं – एक सहस सतसठ सन आहा, संवत् सतरह से चौदहा । कै अरंभ तब कथा बखानी, कीन्हीं प्रगट प्रेम निधि बानी । [10]अन्य सूफ़ी काव्यों की तरह ही इसमें भी प्रेयसी को परमात्मा का और प्रेमी को आत्मा का प्रतीक माना गया है । सम्पादक की दृष्टि में नल और दमयंती इस काव्य में एक दूसरे के लिए परमात्म–रूप हैं। दोनों को एक दूसरे के विरह में समान रूप में व्याकुल दिखाया गया है । दमयन्ती के वर्णन में कवि ने परमात्मा को प्रेम के रूप में चित्रित किया है और नल के वर्णन में ज्ञान रूप में । यह उनके लिंग–भेद के कारण है, जो स्वाभाविक है। [11]सूफ़ी के अन्य महाकाव्यों की भाँति इसमें भी कथानक का विस्तार और अन्त है।

10. हुसैन अली 'कृत पुहुपावती

'पुहुपावती' का रचनाकाल 1725 ई. है । कवि का मूल नाम हुसैनअली तथा उपनाम 'सदानन्द' था । 'पुहुपावती' के पहले छन्द में ही कवि अपने बारे में लिखता है –

> हुसैनअली कवि से यह जाती । करी कथा बिनवें बहु भाँति ।।
> बासक ठाँव कहीं हरि नाऊँ । धरो सदानन्द कवि निजुनाऊँ ।।

पुहुपावती की प्रति स्थल–स्थन पर खण्डित है । प्रारंभ के भी कुछ पृष्ठ उसमें नहीं हैं। इस कारण ईश्वर, मुहम्मद, उनके चार मित्र, शाहेतख्त की प्रशंसा आदि के कारण कथा के अन्त के विषय में भी कुछ ज्ञात नहीं है। कवि हुसैनअली कृत पुहुपावती नामक प्रेमगाथा यद्यपि पद्मावत, मधुमालती, चित्रावली आदि प्रेमाख्यानों के समक्ष नगण्य है, किन्तु प्रेममार्गी हिन्दी के सूफ़ी कवियों की इस परंपरा को इसने आगे बढ़ाने में योग अवश्य दिया है ।

11. कासिम शाह–कृत हंसजवाहिर इस परंपरा को आगे बढ़ाने में योग देने वाले कवि कासिम शाह ने हंस–जवाहिर में बलखनगर के शासक बुरहानशाह के पुत्र हंस और चीन देश के राजा आलमशाह की पुत्री जवाहर की प्रेम–कहानी वर्णित की है । कासिमशाह ने 'हंसजवाहिर' की रचना 1736 ई. बताया है । कवि के काव्य से यह भी पता चलता है कि पीर अशरफ इनके दीक्षा गुरू थे । शाहेतख्त की प्रंशसा करते हुए कवि ने दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के रूप–सौन्दर्य, ऐश्वर्य, बल, बुद्धि, वीरता आदि का भी वर्णन किया है ।

12. (प) नूरमोहम्मद–कृत इन्द्रावती कवि कासिमशाह के पश्चा् 'इन्द्रावती' और अनुराग–बाँसुरी के रचयिता कवि नुरमुहम्मद का नाम सूफ़ी–काव्य परंपरा के अन्तर्गत आता है । कवि ने इन्द्रावती की रचना (सन् 1764 ई.) में की थी । इन्द्रावती की कथा अन्योक्तिमूलक

रूपक के रूप में दो खण्डों – पूर्वार्द्ध और उतरार्द्ध रूप में प्रस्तुत की गई है – जिसका ताना–बाना आध्यात्मिक है । बुद्धि , मन, देह, प्राण, दया, कृपा, क्षमा, प्रेम, स्नेह, काम क्रोध, मद, चितवन, पवन, सुजान, प्रभृति नाम साधना के अंग और मनोभाव मूलक हैं । कुंवर जीवात्मा के रूप में प्रस्तुत किया गया है । तो गुरूनाथ मार्ग दर्शक हैं, आठ मित्र शरीर के आठ विकार हैं। राजकुंवर की रानी 'सुन्दर' सांसारिक मोह का आकर्षक रूप है, जिसकी उपेक्षा करके साधक को रतनजोत या परमऐश्वर्य, सौन्दर्य, शक्ति एवं शीलवान इन्द्रावती की प्राप्ति का प्रयास उचित है । बुद्धिसेन ज्ञान है वह जीव को ब्रह्मप्राप्ति में सहायता देता है। इन्द्रावती, रतनजोत, परमरूप–सौन्दर्या युक्त, परमशक्ति सम्पन्न ईश्वर के प्रतीक रूप में उभरे हैं।

(पप) अनुराग–बाँसुरी

इस कथा का मूल स्त्रोत 'इन्द्रावती' का जीवखण्ड है । इस कृति के माध्यम से कवि ने इस्लाम की प्रशंसा और हिन्दू धर्म को इस्लाम के आगे तुच्छ दर्शाने का प्रयास किया है । काव्य की भाषा अवधी है । इस काव्य की कथा नौ खण्डों में विभाजित है – आरम्भिक खण्ड, स्त्रोता अनुराग खण्ड, बैरागी खण्ड, परदेश खण्ड, मन–भावनी खण्ड, ध्यान देवहरा

खण्ड, पत्री खण्ड, साक्षात् खण्ड और देश आगमन खण्ड । इसे प्रेमकथा न कहकर धर्मकथा ही कहना ज्यादा उपयुक्त होगा।

13. शेख निसार–कृत यूसुफ़ जुलेखा

'यूसुफ़ जुलेखा' की कथा का मूल 'कुरान शरीफ' की कथा में से लिया गया है। लेकिन 'कुरान' का आधार लेने पर भी शेखनिसार ने कथा में पूरी स्वतंत्रता बरती है।

शेख निसार इसकी रचना के बारे में संकेत देते हुए लिखते हैं – दिल्ली में उस समय सुल्तान शाहआलम का राज्य था ।

एक अन्य स्थल पर वे लिखते हैं – इस ग्रन्थ की रचना उन्होंने मात्र 7 दिनों में की थी और यह रचना उन्होंने 57 वर्ष की आयु में अर्थात् 1790 ई. में की थी ।

14. शाहनजफ़ली सलोनी–कृत प्रेमचिनगारी और अखरावती

शाहनजफ़ली सलोनी सलोन जिला रायबरेली के रहने वाले थे । उनके प्यारे पीर शाह करीम थे । उनके जीवन के विषय में बहुत कम जानकारी मिलती है ।

'प्रेम चिनगारी' की पाण्डुलिपि अख्तरहुसैन निजामी को रीवाँ से प्राप्त हुई थी ।[12]इसकी रचना 1845 ई. में हुई । कथा के शुरू में कवि ने निर्गुण वन्दना, मुहम्मद साहब की प्रशंसा चार खलीफाओं एवं इमाम हसन तथा हुसैन का गुणगान तथा पीर की चर्चा की है । मौलाना रूमी की दो कथाओं का यह हिन्दी अनुवाद है, जिसमें पहली कथा में मानव को बाँसुरी मानकर सूफ़ी अद्वैतवाद का स्पष्टीकरण करने का प्रयास किया गया है तथा दूसरी कथा हज़रत मूसा पैगम्बर और गड़रिये की कथा है – जिसमें निर्गुणवाद की व्याख्या करते हुए अनेक स्पष्टीकरण दिये हैं ।

सलोनी की दूसरी रचना 'अखरावती' के केवल कुछ ही छन्द उपलब्ध हुए हैं, लेकिन वे कथा को मू[f] रूप देने में सक्षम नहीं हैं। खण्डित पृष्ठों से केवल इतना ही पता चलता है कि इसकी रचना तिथि 1809 ई. है ।

15. शेख रहीम–कृत भाषा प्रेमरस

शेख रहीम जरवल नगर, जिला बहराइच के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम यारमुहम्मद था, उन्हें गाँववाले 'शेख' या 'नबी' कहा करते थे । कवि रहीम ने कासिमशाह और जायसी को अपना आधार बनाकर 'भाषा प्रेमरस' की रचना की । 'भाषा प्रेमरस' का कथानक काल्पनिक है । इस कथा में प्रेमसेन तथा चन्द्रकला के प्रेम का वर्णन है ।

16. ख्वाजा अहमद–कृत नूरजहाँ

ख्वाजा अहमद की प्राप्त कृतियों में 'नूरजहाँ' ही मुख्य कृति है जिसका रचना काल 1904, 5 ई. है । यह कथा उनकी पूर्णतः काल्पनिक है । इसके कथानक की प्रेरणा 'हंसजवाहिर' और 'पद्मावत' ही हैं। इस कथा में नवीनता लाते हुए कवि नूरजहाँ और खुरशेद को स्वप्न में देखती है, अतः खुरशेद और गुलबोस के प्रयत्न में समानता नहीं रहती । इसी कारण यह काव्य अन्य सूफी ग्रन्थों से कुछ अलग ही बन पड़ा है ।

17. नसीर–कृत प्रेम दर्पण

प्रेमदर्पण में भी 'यूसुफ़ जुलेखा' प्रेमाख्यान ही वर्णित है । नसीर ने 'प्रेमदर्पण' की रचना 1917, 18 ई. में की । 'प्रेमदर्पण' में यूसुफ़ और जुलेखा की प्रेमकथा कही गयी है ।

उपर्युक्त सूफ़ी प्रेमाख्यान एक ही प्रवृति के परिचायक हैं तथा इन काव्यों की परंपरा भारत की प्राचीनतम साहित्यिक परंपरा है किन्तु यह शब्द सूफ़ी प्रेम काव्यों से इतना अधिक सम्बद्ध हो गया है कि यह परंपरा सूफ़ियों के द्वारा भारत लायी गयी प्रतीत होती है ।

पुस्तक सूचीः

1. जोग्रेन्द प्रकाश ठकराल, हिन्दी सूफ़ी काव्य में मिथक (दिल्ली पीयूष प्रकाशन 1997) पृ.16.
2. चंदायन (संपा) गुप्त परमेश्वरी लाल पृ. 84 छन्द 17
3. डॉ. पाण्डेय मनोहर, मध्ययुगीन प्रेमाख्यान पृ. 62
4. जायसी ग्रन्थावली, दोहा संख्या 17 एवं 20
5. जायसी ग्रन्थावली (अखरावट) दोहा संख्या – 26 एवं 27
6. जायसी ग्रन्थावली (ना. प्र. स.) पृ. 343
7. मधुमालती. सं. डॉ. माताप्रसाद गुप्त पृ. 37
8. हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास – घतुर्थ भाग पृ. 333 (ना.प्र.स)
9. सम्पादक उदयशंकर शास्त्री, ज्ञानदीप, छन्द संख्या – 17
10. (संपा). डॉ वासुदेवशरण अग्रवाल और दौलतराम जुयाल नलदमन (काव्य कथा) 27–1–2,पृ.–92
11. (संपा). डॉ वासुदेवशरण अग्रवाल और श्री दौलतराम जुयाल नलदमन (काव्य कथा) पृ.42
12. डॉ – शुक्ल सरला, जायसी के परवर्ती सूफ़ी कवि और काव्य पृ. 532